640 (P)
H (160)
Microfilm

IMPERIAL RECORD
RECEIVED.
30 MAR. 1931
DEPARTMENT
(2) अ 840
891.431 V 592

॥ वन्देमातरम् ॥

राष्ट्रीय-आल्हा

अर्थात

वीर गायन।

कहा दोगलों के यश गावैं,
कहा चुगुलों के लीजे नाम।
साखे गावैं सत–पुरुषों के,
अरपैं मातृ-भूमि पै प्रान॥

पोखपालसिंह-वर्मा,

[सर्वाधिकार सुरक्षित]

प्रति २००० } सन् १९३० { मूल्य =)।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 640
Date 15-12-71
GOVT. OF INDIA

* वन्देमातरम् *

राष्ट्रीय-आल्हा

अर्थात्

वीर-गायन

बन्दना।

प्रथमहिं सुमिरैं जगदीश्वर को, जिन यह रचा सकल संसार।
चार वेद, छः शास्त्र पुकारैं; योगी रटैं श्री औंकार ॥ १ ॥
घोर दुःख भारत पर छाये, जब से तुम्हें दीन बिसराय।
शरण आपकी हम आये हैं, नैया दीजै पार लगाय ॥ २ ॥
परम भक्त यह देश तुम्हारा, केहि की शरण नाथ अब जाय।
तुम बिन कौन हमारा जग में, जो अरुने में करैं सहाय ॥ ३ ॥
देश गुलामी में जकड़ा है, दुख की घटा रही घनघोर।
कृपा दृष्टि भारत पर करदो, निरखहु नाथ देश की ओर ॥ ४ ॥
करहिं बन्दना मातृ-भूमि की, जननी लागहिं चरण तुम्हार।
सिंह प्रसूता जय जगदम्बा, तेरे गुण गावे संसार ॥ ५ ॥
जो नर तेरा ध्यान लगावहिं; सीधे स्वर्ग धाम को जाहिं।
जियत ज़िन्दगी दुनियाँ पूजै; कीरत चली जुगा जुग जाहिं ॥ ६ ॥
गैया मैया तुमको सुमिरैं, जग में महिमा बड़ी तुम्हार।
दूध दही और माखन दधिघा पुरषनि वैतरणी दे तार ॥ ७ ॥
कहा दोगलों के यश गावें, कहा चगुलों के लीजे नाम।
साखे गावें सत पुरषों के, अरपें मातृ-भूमि पर प्रान ॥ ८ ॥
जितने नेता हैं भारत के, बन्दों चरण शीश धरि आज।
दादा भाई और गोखले, पूना वारे तिलक महराज ॥ ९ ॥

बसल केहरी भारत माँ के, जय २ वीर लाजपति राय।
आर्य्य धर्म की उड़ी पताका, शुभ पाताल लोकमें जाय ॥ १० ॥
जय चितरंजन खल-दल गंजन, गर्जे बंग देश में आय।
सुन्दरलाल और माखन प्यारे, भोगहिं कष्ट जेल में जाय ॥११॥
विप्र वंश की विमल पताका, पंडित मालवीय महाराज।
भारत माँ की दुर्गति देखी, कूदे समर भूमि में आज ॥१२॥
यतीन्द्र नाथ के चरण कमल को, सिर धर बन्दौ बारम्बार।
प्राण छूटि गये, प्रण नहिं छूटौ, ६१ छिन न करौ अहार ॥१३॥
भगतसिंह धड़केश्वर बन्दौं. डरपै जिनहि देख कर काल।
सुमिर नेहरू मोतीलाल को, जिन घर भये जवाहरलाल ॥१४॥
सुभट बहादुर सुभाष बन्दौं, दमकें तेज पुञ्ज बंगाल।
नौकरशाही थर थर कांपे, जैसे गरुड़ देख कर व्याल ॥१५॥
भारत माँ के अधिक लाड़ले, वन्दौं वीर जवाहरलाल।
मानहु स्वराज्य उदयाचल पर विकसौ स्वतंत्रता रविबाल॥१६॥
करहिं वन्दना तैयबजी की, दूसरे गांधी के अवतार।
वृद्धावस्था लम्बी डाढ़ी, ताला सैयद की अनुहार ॥१७॥
वल्लभ भाई पटेल वन्दौं, साँचेहु गुजराती सरदार।
मुहरा मारौ बारडोली में, सो घुटना टेक गई सरकार ॥१८॥
करहिं वन्दना विट्ठल जी की, पसम्बली केर परधान।
प्रेसीडेन्ट की गद्दी छोड़ी, कूदौ युद्ध घोर मैदान ॥१९॥
काकोरी के शहीद वन्दौं, जै २ बिस्मिल और अशफाक।
फाँसी के झूला पर झूले, बाँधी गवर्मेन्ट पर धाक ॥२०॥
चरण चूम के राजपाल के, झुकि २ करौ वीर परनाम।
जन्मकी जननी बिलखत छोड़ी, भारत माँ पर भये बलिदान॥२१॥
करहिं वंदना अब गांधी की, उनको जाने सब संसार।
शिव दधीच हरिश्चन्द्र की पटतर, या प्रहलाद लीन अवतार॥२२

देश रसातल के जाने को, सोलह आना था तैयार ।
सत्याग्रह की नैया लेकर, कूदी आन बीच मझधार ॥२३॥
इत हद बँध रही काश्मीर लौं, उत में सात समुन्दर पार ।
अमरीका जापान जर्मनी बंध रही, धाक महात्मा क्यार ॥२४॥
थर २ कापैं चगुला झूठा, कपटी छलिया धोखेबाज़ ।
बढ़े सूरमा हैं दंगल में, जिनके जियमां बसा स्वराज ॥२५॥
होस बंद भये गवर्मेन्ट के, कर्ता कहा रची भगवान ।
अमन सभा के जाय पर्दा में, छिप गये ज़मींदार धनवान ॥२६॥
जय २ गुजरात देश को, जय २ देश काठियावाड़ ।
सिंह प्रसूता वीर-भूमि है, दुसरा समझ लेउ मेवाड़ ॥२७॥
धन्य सती कस्तूरी बाई, राखी सती धर्म की लाज ।
साथ न छोड़ा सुख और दुखमें, पूरण किये पती के काज ॥२८॥
जय २ भारत की देवी, और सरोजनी माय ।
लाज राख लई हिन्दु देश की, घर २ चर्खा दये चलवाय ॥२९॥
उमा नेहरू के पद बन्दौं, कमला देवी को सिर नाय ।
पार्वती सी माता सुमिरौं, जेहि लख गवर्मेन्ट घबराय ॥३०॥
कोख ऊजरी रानी रूपा की, जन्मे धवल जवाहर लाल ।
गोद में खेलौरे जा जननी के, ताके काट दिये भ्रम जाल ॥३१॥
जननी जनहु तो ऐसे सुत जन्महु, नाहिं तो बांझ रहौ जग जाय ।
कायर क्रूर करौ मत पैदा, कोख को वृथा दाग लगजाय ॥३२॥
ऐसी देवी होंय भारत में, आवै फेरि लहिर प्राचीन ।
कौन रोकने वाला जग में, ह्वै है भारत देश स्वाधीन ॥३३॥

———:०:———

प्राचीन भारत ।

प्राचीन भारत की महिमा भैया कीरत सिंधु अपार ।
अष्ठ सिद्धि नव निधि के दाता साखे कहैं पुकार पुकार ॥१॥

करतब पुरिखनु के सुनितय हैं बल और विद्या के भंडार।
दया धर्म के परम स्नेही करते रहे सदा उपकार ॥२॥
गौ ब्राह्मण और हरि भक्तों के करते रहे सदा सब काज।
प्राण छूटि गये प्रण ना छूटा बड़े २ धर्म बीर महाराज ॥३॥
भाव दुरंगे नहिं कहुँ राखे सबको समझा एक समान।
ना काहू सों करी दूसरी किये सत्य बचन परमान ॥४॥
पुत्र समान प्रजा को पाला करते रहे निछावर प्रान।
जेहि काहू ने प्रजा सताई तेहि को काढ़ी विजय कृपान ॥५॥
चींटी से हाथी तक लेकर और ले ब्राह्मण से चंडाल।
दया भाव सबही पर राखो करते रहे सदा प्रतिपाल ॥६॥
गौ, कन्या के दुखड़ा मेंटे अपना सरबस दिया लुटाय।
स्वेच्छाचारी एक न छोड़ो अत्याचारी दिये मिटाय ॥७॥
असुर बिहीन मही कर डाली घुग्घू कामी दिये नशाय।
चुगुला झूँठा एक न छोड़ो ठाढ़े जमीं दिये गड़वाय ॥८॥
ना कहुँ भोगी नीच गुलामी पुरखा रहे सदा स्वाधीन।
तिन घर ऐसे भये औलिया ह्वै गये गैरों के आधीन ॥९॥
मौत अजायें ना भईं कबहुँ नहिं भये स्वपनेऊ में बीमार।
मात पिता की जियत जिन्दगी नहिं तज गये पुत्र संसार ॥१०॥
नहिं हैजा नहिं ताउन देवी नहिं आया कहुँ काल बुखार।
हटीर चुरियां नहिं कहुँ मौरी सपनेउं लखी न बिधवा नार ॥११॥
दशवां हिस्सा माल गुजारी सुख से देते रहे किसान।
पढ़े लिखे सब नर और नारी घर २ बांचैं कथा पुरान ॥१२॥
नहिं शराब और मदिरा सुलफा नहिं चण्डू की खुली दुकान।
नहिं सपनेऊ में खुले कबेले नहिं थे गौ-भक्षक इन्सान ॥१३॥
सब स्वतन्त्र सब परोपकारी घर घर छाय रहो आनन्द।
नहिं कोई नंगा नहिं कोई भूखा रैयत राजा लखमीचन्द ॥१४॥

दूध दही की नदी बहति हीं नित उठ होत मंगलाचार ।
रड़िका दुखिया के घर २ में हुय २ कलश सोबरन क्वार ॥१५॥

इस्लामियां भारत ।

साल बिगारे हैं काहू ने चुगुलन डारे देश बिगार ।
तख्त पलट दियो हा ! भारत का गजनी चढ़ा अठारह बार ॥१॥
थोड़े दिन की बात सुनावें पिछला देख लेउ इतिहास ।
पृथीराज दिल्ली के राजा जयचन्द करि दिया सत्यानाश ॥२॥
धन दौलत और माल खजाने सोना चांदी बेसुम्मार ।
लूट २ भारत से ले गये खाली कर दिये सब भंडार ॥३॥
बैर फूट से भारत उजड़ा नीके बिगर गये सब काज ।
मुसलमान भारत में आये अपना करन लगे साम्राज ॥४॥
अन्ध मुहम्मदी थे अन्यायी कीये बड़े २ अन्याय ।
घोर लड़ाई भई मज़हब की ढाढ़े कतल किये करवाय ॥५॥
या तो धर्म मुहम्मदी मानो या फिर बाँधो विजय कृपान ।
धर्म युद्ध में खिची सिरोही तब भये बड़े २ बलिदान ॥६॥
अन्यायन के राज भंग भये नशि गये जराभूल ते जाय ।
नाम को लेवा पानी देवा नहिं कोई पीछे पड़े दिखाय ॥७॥
मात पिता भ्रातादिक प्यारे हारे राज हेतु मरवाय ।
ते पापी रैयत के संग में भैया करें कौन विधि न्याय ॥८॥
कोई २ राजा थे व्यभिचारी तिन फल पाये दुःख अपार ।
करनी के फल उनहूँ भोगे ह्वै गये सकल जगत में ख्वार ॥९॥
पेट दुखारी नहिं कोई सोया बेशक रही मजहबी मार ।
खान पान भोजन कपड़ा से पूरण रहे सकल नर नार ॥१०॥
लड़ते भिड़ते रहे बराबर निर्भय बांधे सब हथियार ।
बड़े साहसी और बहादुर रहते मरने को तैयार ॥११॥

बसे मुसल्माँ फिर भारत में अपना समझे देश हमार।
नहिं फिर कबहूँ सम्पति लूटी नहिं रैयत का किया बिगार॥१२॥
भये हुमायूँ के घर अकबर तिनके आलमगीर सुजान।
शाहजहाँ आदिक भये पैदा इनको जाने सकल जहान॥१३॥
टेर पुकार सुनी जनता की, गौ-वध बन्द दिया करवाय।
ऊंच नीच का भेद न राखो हिन्दू मुसलमान दोउ भाय॥१४॥
बड़े बड़े ओहदा जो पल्टन के हिन्दू अफ़सर दिये बनाय।
राज खजाने की लै कुञ्जी टोडरमल को दई गहाय॥१५॥
जो जेहि लायक जेहि दिन समझा तेहि दिन फौरन दिया बनाय।
सूबेदारी और मंत्री पद हिन्दुन मिले बराबर आय॥१६॥
जब जब मात्रा घटी धर्म की और बह चली पाप की धार।
मुहरा मारे तब क्षत्रिन ने अपनी खैंच लई तलवार॥१७॥
अपना बिराना नहिं कोई देखो जेहि ने कीया अत्याचार।
बिना पाप का मजा चखाये नाहिन म्यान करी तलवार॥१८॥
प्रताप राणा को जग जाने धन मेवाड़ भूमि के शेर।
घेर २ दिल्ली तक मारे रिपु दल काट लगाये ढेर॥१९॥
स्वतंत्रता देवी के कारण तज दिया राज पाट धन धाम।
प्राण छूट गये प्रण ना छूटा नहिं बैरी को करी सलाम॥२०॥
भैया बंधु हितू सब अपने तजि गये विपति काल में संग।
वर्ष पचीसक बनवासी भये जारी रही बराबर जंग॥२१॥
बादशाह औरंगजेब भये भारी करन लगे अन्याय।
सिंह शिवाजी पैदा ह्वै गयो तब महाराष्ट्र देश में आय॥२२॥
होश बन्द पापिन के कर दिये धर्म का झण्डा दिया घुमाय।
अत्याचारी एक न छोड़ो कारे दखा दिये करवाय॥२३॥
पुरुष घमण्डी कोउ ना छोड़ा जेहि सपने हूँ में गहे हथियार।
गढ़ियामढ़ियाँ तसनस करदीं और गढ़ करदिये पनियांढार॥२४

बड़े २ राजा और रजवाड़े ह्वै गये पराधीन झकमार।
फीकी पड़ गई औरंगज़ेबी सिक्का चला शिवा जी क्यार ॥२४॥
जियत जिन्दगी शेर शिवाजी को भारत सोया पांव पसार।
मरत शिवाजी परलै ह्वै गई चहुँदिश छाय गया अंधियार ॥२५॥
सो नाकी टूट गया सिरसा का पानी गिरा महोबे जाय।
बनी बिगड़ गई अब भारत की सौ २ कोस पुकरुआ नाँय ॥२६॥
शेरों के घर गीदड़ जन्मे विषयी कायर क्रूर गुलाम।
खुद गर्जी आलसी प्रमादी बोरे सात साख के नाम ॥२७॥
सदाँ न फूले सावन तुरई और फिर सदा न सावन होय।
गई जवानी फिर ना आवे सरवस दिया हाथ से खोय ॥२८॥

---:o:---

अंग्रेजी भारत।

घुसे फिरंगी अब भारत में आकर करन लगे व्यापार।
खुली कपंनी कलकत्ता में अपने फैलाया रुजगार ॥१॥
गिरा सितारा है भारत का लड़ने लगे बन्धु से बंध।
बनियां समझे थे भारत ने फैंकन लगे कपट के फंद ॥२॥
इधर की बतियाँ उधर बनाई उधर की इधर बनाई आय।
धीरे २ बदल पैंतरा अपना अड्डा लिया जमाय ॥३॥
करे वायदा सुख शान्ती के पूर्ण बनि गये ठेकेदार।
व्यौपारी बन कर आये थे अब तो बन बैठे सरकार ॥४॥
देखत रह गये सनई बुद्धू चुपके रह गये भरम गमाय।
दै दै धोखे निरबुद्धिन को हड़ियां जवा लिये बिकवाय ॥५॥
कौन बढ़ावै जंजारन को झगड़ा कहत जन्म सब जाय।
लाख बात की एक बात है भैया सुन लो कान लगाय ॥६॥

और ही चिरयां डोलन लागी और ही होन लगा ब्यौहार ।
मालिक भारत के बन बैठे डंका बजा फिरङ्गिन क्यार ॥७॥
रजवाड़े सब ऊजड़ होगये क्षत्रिन धरे जनाने भेष ।
राजा थे सो रैयत बन गये कर दिया पराधीन सब देश ॥८॥
आज न आल्हा, ऊदल, मलखे, ब्रह्मा, और जगनका राय ।
शेर शिवाजी, प्रताप राणा नहिं भारत में पड़ें दिखाय ॥९॥
कुर्सी तोड़ा मूँछ मरोड़ा फिदवी हां, हुजूर की राय ।
माहिल मामा डरई वारे घर २ डंका रहे बजाय ॥१०॥
कहां कहँ कुछ कह नहिं आवे और बिन कहँ रहा नहिं जाय ।
राज फिरङ्गी का भारत में चुगलन ग़दर दीन्ह फैलाय ॥११॥
राय बहादुर खान बहादुर बढ़िया चुगुल बहादुर जान ।
बिना तलब के जो नौकर हैं कर दिया भारत का मैदान ॥१२॥
जो कोई इनकी बात न माने सीधी राय देंय बतलाय ।
राजद्रोही ताहि बतावें झूठे झगड़े दें लगवाय ॥१३॥
दे दै डालीं प्रभु साहब को गोरे देवता लेंय मनाय ।
एक बात की आठ बनावें चुपके लगे कान से जाँय ॥१४॥
नौकरशाही की बनि आई स्वेच्छाचार दिया फैलाय ।
दुइ २ पैसा के नौकर हैं बन गये लाट साहब के भाय ॥१५॥
पुलिस महकमा की लीला को भैया जाने सब संसार ।
पूरबले के पाप उदय हौंय तिन घर आवैं थानेदार ॥१६॥
रक्षक थे सो भक्षक हुइ गये दैया जेहि परलै के ठाट ।
नौकर थे सो मालिक हुइ गये मालिक करदै बारहबाट ॥१७॥
जो कोइ इनकी करै न पूजा नहिं दे रसद घूंस बेगार ।
तौ ताकी कम्बख्ती आवै जिस दिन सहै थार पर वार ॥१८॥
चुगुला झूठा मौज उड़ावे सच्चे फँसै जाल में जांय ।
नम्बर आठ रजिस्टर बढ़िया चुपके नाम देत लिखवाय ॥१९॥

दीन किसानों के दुखड़ा की हम पर कथा कही ना जाय।
देख दुर्दशा छाती धड़के लिखते कलम बन्द हुइ जाय ॥२०॥
अन्न वस्त्र के देने वाले हाय, भारत के जीवन प्रान।
जेहि मन आवे सोइ सतावे तड़पें दुखिया दीन किसान ॥२१॥
जिन्स तुलाई चन्दा बाँधें पीछे रही बकाया आय।
बुरी मार है बेदखली की भैया खरा खोज मिट जाय ॥२२॥
जैसे चीर द्रौपदी बाढ़ो बाढ़े दिन और रात लगान।
नज़र भैंट और नज़राने की ठानी ज़मींदार ने ठान ॥२३॥
एक बात होय ताहि सुनावें सौ की एक देंय बतलाय।
जो कोइ लिखने वाला बैठे पूरण दुख सागर बन जाय ॥२४॥
कहं तक रोवें हम दुखड़ा को अब दुख कथा कही ना जाय।
सो लाख बात की एक बात है मित्रो! तुम्हें देंय बतलाय ॥२५॥
सूना देख लिया भारत को यह है धन दौलत की खान।
बढ़ा अर्थियों का दल भारी रक्षा करो श्री भगवान् ॥२६॥
किहि के दिल का दर्द सुनावें मनकी विथा कहें समझाय।
कोई न टेर सुनें जनता की दुनियां सब मतलब की यार ॥२७॥
पर देर होत है ईश्वर के घर पर नहिं रहै सदा अंधेर।
पाप घड़ा जब पूर्ण भर जाय फूटत लगे न पल की देर ॥२८॥
देश रसातल कें जाने को सोलह आना था तैयार।
कृपा दृष्टि ईश्वर की है गई गांधी आय लीन्ह औतार ॥२९॥
लाज राख ली हिन्द देश की डूबत नैया लई बचाय।
करी शंख-ध्वनि असहयोग की सोवत जनता दई जगाय ॥३०॥
इसी महात्मा की कृपा ने शान्ति व्रत को दिया चलाय।
नौकरशाही को ललकारा जल्दी छोड़ देउ अन्याय ॥३१॥

—— :o: ——

पंजाब का हत्याकाण्ड और असहयोग ।

:o:o:

रौलट बिल सरकार बनाया करके पूरण स्वेच्छाचार ।
घोर विरोध कियो भारत ने नहिं जनता की सुनी पुकार ॥१॥
आत्म प्रतिष्ठा मिटी देश की कुचली जाय श्रयी सन्तान।
सत्याग्रह गांधी ने कर दिया खैंची सत्य धर्म की आन ॥२॥
शोक छाय गयो है भारत में पूरण फेर भई हड़ताल ।
नगर २ में शोक सभायें भैया होन लगी तत्काल ॥३॥
करी बन्दना जगदीश्वर की व्रत से रहें सकल नर नार।
अमृतसर में हा ! डायर ने भैया बादर डारे फार ॥४॥
हुक्म बोल दिया कतलेआम का तजि पञ्जाब देश का नेह।
मेह की बूंदन गोली बरषी जैसे गिरे भदैयां मेह ॥५॥
खिची जुनरवी फेर मगरबी तेगा खिचा विलायत क्वार।
चौतरफा से जनता घेरी ऊपर पड़ी बम्ब की मार ॥६॥
वार २ में गोली लागे चाहे तिल २ पर लगै तलवार ।
करी प्रतीक्षा है जनता ने हट कर धरें न पैर पिछार ॥७॥
फट २ फट २ मशीनगन होंय लथ पथ गिरें पंजाबी ज्वान।
बारह बरष के मदनलाल के हा, छाती पर भया निशान ॥८॥
बड़ा जुल्म डायर ने कीना तस नस कीनी सब पञ्जाब।
घूंघट खोले तें अबलन के मुख की उतर गई सब आब ॥९॥
सत् बन्तिन के शील डिगाये सब के देखत नैन उघार।
लानत पड़ गई रजपूती पर पगिया बाँधन को धरकार ॥१०॥
नाक के बल से रेखा खींची पेट के बल से दिये चलाय।
नंगे करि २ बैंत जमाये दुर्गति करी बनाय बनाय ॥११॥
बहुतक युवती विधवा हुइ गईं छूटा पती देव का साथ।
दूध पियंते बालक मारे और भये बालक बहुत अनाथ ॥१२॥

सो लुटी मिहरियाँ हा,दिन दुपहर दुहिता पकड़ घसीटीं केश।
अत्याचार करो मन माना मानहुं बिना मर्द का देश ॥१३॥
जेहि गति देखी जब गांधी ने नैया डूबत है मझधार।
कवच अहिंसा का धारण कर बांधी असहयोग तलवार॥१४॥
छोड़ आसरा जिंदगानी का कर दिया साफ २ एलान।
छोड़ो गुलामी इन लोगन की अपने आप करो गुजरान ॥१५॥
बेड़ी मार दई चरखा की सब दल तिड़ी बिड़ी हुइ जाय।
बहुतक भैया देशद्रोही शामिल भये पाप में जाय ॥१६॥
खेल लेडियो में खेले थे नहिं कहुं पड़ा मर्द से काम।
मुहरा पड़ गयो है गांधी से उलटा पड़ गया हिन्दुस्तान॥१७॥
मान मान्चेस्टर के बिगड़े लंकाशायर गया दहलाय।
चेम्स फोर्ड के छक्के छूटे सीधे भगे विलायत जाय ॥१८॥
दमन अस्त्र रीडिंग ने छोड़े भर दिये जेल ठसा ठस जाय।
शान्ति वृष्टि गांधी ने करदी रीडिंग कर्म ठोंक रह जाय ॥१९॥
कहां कहैं कछु कहि नहिं आवै और बिन कहे रहा न जाय।
अत्याचार पुलिस के देखे गुस्सा गई देश में छाय ॥२०॥
सो थाना फूंक दयो जनता ने चोरी चोरा के मैदान।
बन्द लड़ाई गान्धी ने करदी बच गई गवर्मेन्ट की आन ॥२१॥

सत्याग्रह–संग्राम।

(सन् १९३०)

काहे कारण को मलियागिर काहे कारण नागर पान।
काहे कारण रामचन्द्र भये, काहे कारण भये हनुमान ॥१॥
काहे कारण को भीषम भये, काहे कारण भये नँदलाल।
काहे कारण गान्धी जन्मे काहे को भये जवाहरलाल ॥२॥

खीर लगावे को मलियागिर और चादन को नागर पान।
रावण बध को रामचन्द्र भये लंका फूकन को हनुमान ॥३॥
बाण सेज पर भीषम सोहे कंस पछारन को नंदलाल।
सत्याग्रह को गांधी जन्मे गर्जे शेर जवाहरलाल ॥४॥
कठिन लड़ाई सत्याग्रह की भैया सुनलो कान लगाय।
प्रान प्यारे जा काहुकों सो घर छिपौ जनाने में जाय ॥५॥
हरी २ चुरियां कर में पहिनों माथे पै ईंगुरे बूँद लगाय।
एक चादर ऊपर से ओढ़ौ आंखें नीचे कों लेउ नवाय ॥६॥
आधी बात न फिर कोई कहि है भारत चलौ रसातल जाय।
भागत बनें तो तुम भगि जैहो घर इंगलैन्ड बनै ही जाय ॥७॥
जिनहि प्यारी मातृ-भूमि है कूदे समर भूमि में आय।
पाव पिछारी कूँ नहिं धरिहैं चाहे तन धजी२ उड़ जाय॥ ८॥
ढीली धोतिन के बँधवैया गलियन चलैं मरोरा चाल।
छैल चिकनियाँ गरियारिलु के तिनके ह्वै गये बुरे हवाल॥ ९॥
थर २ कॉंपै बगुला झूठा कपटी छलिया धोकेबाज।
बड़े सूरमा हैं दंगल में जिनके जिय माँ बसे सुराज॥ १०॥
सो बैरिन भई नौन की डेली अटकी गले बीच अब जाय।
सांप छछूंदर की गति ह्वै गई उगिलत बनें न भीतर जाय॥ ११॥
स्वर्ग झोपड़ा सब काहू को कोऊ आज मरे कोऊ काल।
अमर नहिं ना कोऊ दुनियां में सब चल बसे काल के गाल॥ १२॥
सो खटिया पड़कें जो मरि जैहो सड़ि ही नर्क कुंड में जाय।
जो बलि जैहो मातृ-भूमि पर तो जस रहै जगत में छाय॥ १३॥
गंगा जमुना में जल रहि है जौलों रहें चन्द्र और भान।
हरवा चढ़ि हैं नित फूलन के नर और नारि करें गुण गान॥ १४॥
राम और रावण के रण में विजयी भये श्री रघुनाथ।
कृष्णचन्द्र ने कंस पछारौ काटौ शीश आपने हाथ॥ १५॥

हरनाकुश प्रहलाद सताओ पटकौ अग्नि दैत्र में जाय।
गवर्मेन्ट गांधी को बरनी दे त्रै किन पर राम रिसयाय ॥ १६ ॥
सौ तीस कोट भारतवासिन सौं विनती करूँ जोर दोऊ हाथ।
भारत की पगिया को पानी शोभा शर्म तुम्हारे हाथ ॥ १७ ॥

राष्ट्रीय-मल्हार।

टेक-मोहि न सुहाय घरबार, सो आई ऋतु सावन की री मैया।
जेल में बन्दी बूढ़े गांधी से बाबा री मैया।
अन्यायी सरकार ॥ १ ॥
भैया जतीन्द्र से अब न मिलैंगे मैया।
कोटिन धरूँ औतार ॥ २ ॥
भगतसिंह बटकेश्वर भैया री दोनौं।
जनम जीयत कारागार ॥ ३ ॥
वीर जलाहर जेल में बन्दी री मैया।
तन,मन,धन दीयौ वार ॥ ४ ॥
राजपाल दस वर्ष को भैयारी मैया।
मारि कैं डारैं जलधार ॥ ५ ॥
वस्त्र विदेशी में आग लगाऊँ री मैया।
गऊ के रुधिर में सरसार ॥ ६ ॥

दोहा—हो जाना होशियार धर्म की छिड़ी लड़ाई है।
एक लंग कपिला गाय एक लंग खड़ौ कसाई है।

भजन

टेक–करके गान्धी जी से वैर यार तुम फ़तह न पावोगे ॥
नये २ आर्डीनैन्स बनादो ।
चाहे अमन सभा जुर वादो,
सोरों में गोली चलवादो । चाहे वाह, जरार लुटादो ॥
पर सत्याग्रह की विकट मार है बचन न पावोगे ॥करके १॥
अखबारों को बंद करादो । चाहे बच्चों को पिटवादो ॥
मां बहिनों को कैद करादो । राजपाल चाहे मरवादो ॥
इन सब पापों का जगदीश्वर से बदला पावोगे ॥२॥
सोलापुर बीरान करादो पेशावर में गोली चलवादो ॥
निर्दोषों के सिर तुड़वादो मार्शला घर २ करवादो ॥
पर जब स्वराज भारत में होगा तब कहां जावोगे ॥३॥
६ महिना की चाहे जेल करादो घर घूरे नीलाम करादो ।
भूखे मरें किसान मिटादो जितना बल हो सभी लगादो ॥
पर पोखपाल कहै अब भारत से जल्दी जावोगे ॥४॥

ग्रामीण-गीत

(ब्रज-ध्वनि)

टेक—कृष्ण जी भारत गारत है चलौं,
दुख रोइ रही तेरी भारत माय ।
बड़े तो निशाचर जगत में; करत महा अन्याय ॥१॥
घोर जुलम नित है रहे, कहें तो जेल है जाय ॥२॥

तेरे ग्वाल बाल सब पिटि रहे, रुधिर सों रहे चुचाय ॥३॥
तेरी गऊ माता सब कटि रहीं, बछरा रहे रम्भाय ॥४॥
तेरौ भक्त गान्धी जेल में, प्रगट होइ प्रभू आय ॥५॥
तेरे मोती० जवाहर कैद में, रहे हैं महा दुख पाय ॥६॥
तेरी द्रोपति ठाढ़ी लुटि रही, रहे इन्हें असुर सताय॥७॥
प्रभू चक्र सुदर्शन कर गहौ और देउ अन्याय मिटाय॥८॥

शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

A. W. Press, Lucknow.